आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 28/06/2016 ● अंक - 569 ● तारीख - 29 जून 2016, आषाढ कृष्ण - 09 ● बुधवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया ● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

भगवान का नाम गान करते रहो तथा मन मे उसकी महिमा का चिन्तन चलता रहे।

प्रसिद्ध सूर्य मंदिर

नालंदा सूर्य मंदिर

नालंदा का प्रसिद्ध सूर्य धाम औंगारी और बड़गांव के सूर्य मंदिर देश भर में प्रसिद्ध हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां के सूर्य तालाब में स्नान कर मंदिर में पूजा करने से कुष्ठ रोग सहित कई असाध्य व्याधियों से मुक्ति मिलती है। प्रचलित मान्यताओं के कारण यहां छठ व्रत करने बिहार के कोने–कोने से ही नहीं, बल्कि देश भर के श्रद्धालु यहां आते हैं। लोग यहां तम्बू लगा कर सूर्योपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ संपन्न करते हैं। कहते है भगवान कृष्ण के वंशज साम्ब कुष्ठ रोग से पीड़ित थे। इसलिए उन्होंने 12 जगहों पर भव्य सूर्य मंदिर बनवाए थे, और भगवान सूर्य की आराधना की थी। ऐसा कहा जाता है तब साम्ब को कुष्ठ से मुक्ति मिली थी। उन्हीं 12 मंदिरों में औंगारी एक है। अन्य सूर्य मंदिरों में देवार्क, लोलार्क, पूण्यार्क, कोणार्क, चाणार्क आदि शामिल है।

रांचि सूर्य मंदिर

रांची से 39 किलोमीटर की दूरी पर रांची टाटा रोड़ पर स्थित यह सूर्य मंदिर बुंडू के समीप है 7 संगमरमर से निर्मित इस मंदिर का निर्माण 18 पहियों और 7 घोड़ों के रथ पर विद्यमान भगवान सूर्य के रूप में किया गया है। 25 जनवरी को हर साल यहां विशेष मेले का आयोजन होता है।

रणकपुर सूर्य मंदिर

राजस्थान के रणकपुर नामक स्थान में अवस्थित यह सूर्य मंदिर, नागर शैली में सफेद संगमरमर से बना है। भारतीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता यह सूर्य मंदिर जैनियों के द्वारा बनवाया गया था जो उदयपुर से करीब 98 किलोमीटर दूर स्थित है।

दिल्ली में फ्री वाई–फाई का सपना होगा साकार

केजरीवाल का ब्लूप्रिंट तैयार

दिल्ली में फ्री वाईफाई के सपने को पर लगने वाले हैं. आम आदमी पार्टी की सरकार ने फ्री पब्लिक वाई–फाई प्रोजेक्ट तैयार कर लिया है. पहले चरण में पूर्वी दिल्ली के 571 चुनी गई जगहों पर हॉटस्पॉट जोन बनाने का फैसला किया गया है।

पार्टी प्रवक्ता आशीष खेतान ने शुक्रवार को सरकार की ओर से घोषणा करते हुए बताया, शहरभर में कुल 3000 एक्सेस प्वॉइंट होंगे. इसी संख्या में हॉटस्पॉट भी एड किया जाएगा. लोगों को प्री इंटरनेट कंजम्पशन दिया जाएगा. ये पूरी दुनिया में सबसे बड़ा पब्लिक वाईफाई होगा.श

एक हॉटस्पॉट से 120 लॉगइन

खेतान ने बताया कि एक हॉटस्पॉट पर 120 लोग एक साथ लॉगइन कर फ्री वाई–फाई का फायदा ले सकेंगे. सरकार ने इसके साथ ही कॉमन फाइबर नेटवर्क बनाने का भी फैसला किया है. सरकार हाईस्पीड फाइबर नेटवर्क पहुंचाने के लिए काम करेगी ताकि जनता गीगाबाइट की हाईस्पीड में इंटरनेट इस्तेमाल कर सकें.

2016 तक पूर्वी दिल्ली में शुरू होगी सुविधा

'आप' प्रवक्ता ने कहा, पूरी दिल्ली में कॉमन फाइबर नेटवर्क की आवश्यकता है. इस कमी को दिल्ली सरकार पूरा करेगी. आईटी डिपार्टमेंट नोडल एजेंसी है. जल्द ही इस ओर टेंडर का प्रोसेस होगा. साल के खत्म होने तक पूर्वी दिल्ली में हॉटस्पॉट चलने लगेगा. कॉमन फाइबर के लिए PWD नोडल एजेंसी है और PWD ने काम करना शुरू कर दिया है।

नवजात शिशु की देखभाल–माताओं की अनिवार्य भूमिका

नवजात शिशु (विशेष तौर से) रोगों के प्रति असुरक्षित होते हैं। यदि परिवार द्वारा सरल और व्यावहारिक उपाय अपनाएं जायें तो होने वाले रोगों का निवारण और नवजात शिशु की मौत को रोका जा सकता है। गर्भधारण के तुरन्त बाद ही शिशु की देखभाल शुरू की जानी चाहिए।

सुनिश्चित करें की गर्भधारण की प्रारम्भिक स्थिति मे गर्भवती महिलाएँ नजदीक के स्वास्थ्य केन्द्र में पंजीकरण कराएँ।

गर्भावस्था के दौरान वे कम से कम तीन बार जाँच अवश्य करायें।

सुनिश्चित करें कि प्रसव स्वास्थ्य केन्द्र में ही हो। यदि सम्भव न हो तो सुनिश्चित करें कि प्रशिक्षत दाई/नर्स कराएँ।

संक्रमण रोकेः–

प्रसव पूर्व अवधि के दौरान गर्भवती महिलाओं को टिटनेस टाक्सायड का इन्जेक्शन दिया जाना चाहिए। यह माता और नवजात शिशु में टिटनेस की रोकथाम करने के लिये आवश्यक है।

यदि प्रसव साफ वातावरण में नही करवाया जाता है तो नवजात शिशुओं को संक्रमण हो सकता है। देखभाल करने वाले व्यक्ति को अपने हाथ साबुन और पानी से धोने चाहिए। साफ बिस्तर पर प्रसव करवायें, नाल को काटनें के लिये एक नये ब्लेड (जो प्रयोग किया हुआ न हो) का प्रयोग करें, नाल को बांधने के लिये साफ धागे का इस्तेमाल करें और उस धागे पर कुछ न लगायें।

माताओं को प्रसव स्वास्थ्य केन्द्र पर ही करवाना चाहिए। यदि माता घर पर ही प्रसव कराने का फैसला करें तो उसे स्वास्थ्य कार्यकर्ता से प्रसव किट (डीडीके) लेनी चाहिए और इस बात पर जोर दे कि प्रसव के दौरान प्रसव किट का प्रयोग किया जायेगा। यदि प्रसव प्रशिक्षण किट उपलब्ध न हो तो माता को अवश्य ही साबुन की टिकिया, नया अप्रयुक्त ब्लेड ओर थोड़े से सफेद धागे की व्यवस्था करनी चाहिए। प्रसव के पश्चात शिशु को सुखाने औश्र लपेटने के लिए सूती कपडें के साफ धुले हुए टुकडे भी उपलब्ध होने चाहिए।

प्रसव के तुरन्त पश्चात शिशु को स्तनपान कराना चाहिए। शहद, गुड़–पानी इत्यादि पदार्थ नहीं दिये जाने चाहिए, छः मास की आयु तक शिशु को केवल माता का दूध ही दिया जाना चाहिए इस अवधि के दौरान पानी की भी आवश्यकता नहीं होती।

किसी भी परिस्थिति में दूध पिलाने वाली बोतलों अथवा शमकों का प्रयोग नहीं किया जायेगा क्योंकि ये संक्रमण के स्त्रोत हैं और अतिसार उत्पन्न कर सकते हैं जो शिशु की मृत्यु का कारण हो सकता है। शिशु को बहुत सारे व्यक्ति न उठायें शिशु को भीड़–भाड वाले स्थानों पर नहीं ले जाना चाहिए। अतिसार और खांसी जैसे संक्रमणों से ग्रस्त लोगों को बच्चे को नहीं उठाने दिया जाना चाहिए।

न्याय

न्याय को कोई मित्र एवं स्वजन नहीं होता और मित्रों के पक्ष में न्याय कभी विचलित भी नहीं होता। मित्रों को झुकता तौलना या किसी भी प्रकार की रियायत देना न्याय के स्वभाव में नहीं है। न्याय शुरू से ही रूखे स्वभाव का रहा है। न्याय जब कसौटी पर चढ़ता है तब उसकी मुस्कान समाप्त हो जाती है। गम्भीर चेहरा ही न्याय का वास्तविक स्वरूप है। न्यायाधीश की कलम की नोक विषधर के दाँत से कम खतरनाक नहीं होती, इसलिए नियुक्ति से पूर्व उसे शपथ दिलाई जाती है कि वह किसी निर्दोष पर आघात न करे अर्थात् अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान बना रहे। हलाहल के बाहुल्य से तुरन्त मृत्यु हो जाती है और कम विष से निर्दोष घुल–घुल कर मरते हैं। सभी की तरह न्याय भी अपने कर्मों के लिए पूर्ण रूप में जिम्मेदार होता है। ईश्वर के न्यायालय में न्याय के लिए क्षमादान का विधान नहीं है और न ही उसे अच्छा जीवन जीने के लिए

एक और मौका तथा विधि में किसी भी प्रकार की रियायत दी जाती है। काले कोट पर कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ता, इसलिए साधारणतया सिफारिशें बेअसर हो जाती हैं, लेकिन शपथ को भूल जाने वाले और सिद्धान्तों से हट जाने वालों के काले कोट पर लक्ष्मी का रंग चढ़ता हुआ सुना गया है, जो मानवीय गिरावट के वेग को बढ़ाता है और जिसे राष्ट्र के लिए कम दुर्भाग्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

शासन की आधारशिला न्याय पर ही स्थिर होती है। जब आधारशिला डगमगाने लगती है तब समझ लेना चाहिए कि बिना नींव का भवन बाढ़ का सामना नहीं कर सकेगा और वह मूसलाधार वर्षा में धराशाही

हो जाने वाला है। किसी भी देश की सुव्यवस्था के लिए न्याय रीढ़ तुल्य है। रीढ़ पर बार–बार चोट करना जीवन पर चोट करने के समान है। लगातार की छोटी चोटों से भी जीवन समाप्त हो जाता है जबकि बड़ी मार्मिक चोट तो शुरू में ही अस्तित्त्व मिटा देती है। सत्य के बदले खोटी दमड़ियाँ पाप बढ़ाती हैं और व्यक्तित्व को समाप्त कर देती हैं, जो एक बहुत बड़े घाटे का सौदा है। माया की चमक में बहुत अधिक खतरे समाये हुए होते हैं, इसलिए मेरे आदरणीय बन्धु, किसी कभी निर्दोष की दुराशीष मत लेना और अपने कर्त्तव्य एवं राष्ट्र के प्रति पूर्णरूप से वफादार रहना तथा मानवता का भी सम्मान करना।

क्रांति–कथा

भूमिका

नाप तोल कर बोलोगे तो, भर मिठास से शब्द सभी।
वातावरण शान्ति मय होगा, दुःखी न होगा कही कभी।।

चींटी पहाड़ परा तो शायद नहीं चढ़ पायें, पृथ्वी से सूर्य की दूरी को नाप न पावें किन्तु ज्ञानेन्द्रियों के विषय – शब्द (पहले तौल फिर बोल) स्पर्श (हनुमान ते हि परसा) रूप (पर नारी सूं मातृवत, परद्रव्यसूं लोष्ठवत) रस (जैसा खावें अन्न वैसा होवे मन) एवं गंध (भजन करे पाताल में, प्रकटत होय अकाश दाबी दूबी ना दबै कस्तूरी की वास) के कुछ नजदीक हमारा आचरण पहुँच जायें।

अन्धकार मय जिनका जीवन, उसे उजाले से भर दो।
क्रांति कथा का अर्थ यही है, हर जीवन धन धन कर दो।।
चक्र अनाहत में हम मिलकर, हम सेवा की ज्योति जलादें,
मूक बधिर बच्चों में प्यारे, करूणा का एक लहर उठादें।।

ये क्रांति कथा है पायें हुए उस ज्ञान को पाने का जिसमें लड़खड़ाते हुए दिव्यांग के ऑपरेशन सहित सहायक उपकरणों से उस चेहरे पर क्रांति लाने का।

नि:शक्त और दिव्यांग का जीवन, बन कर भार खड़ा है।
दया और करूणा सेवा का, कितना काम पड़ा है।।

सद्प्रेम है, सद्प्रयत्न है, आँखों के अंधेरे के बावजूद 80 लाख से अधिक प्रज्ञाचक्षुओं के चेहरे प्रज्ञाचक्षुओं के हृदय के अनाहतचक्र में एक मशाल जलाने का, छोटा सा लेकिन गंभीर सद्प्रयत्न है।

इसी देह देवालय में ही, राम, कृष्ण, महावीर बिराजे।
महादेव, नानक, नारायण, जिनसे सारा जग अनुरागे।।
इसी देह में क्रांति कथा की, पावन लहरें उमड़ रही है।
करो स्नाना इस क्रांति कथा में,शाश्वत जीवन एक यहीं है।

क्रमशः अगले अंक में...

मानव मन के बोल

मानव मात्र एक समान

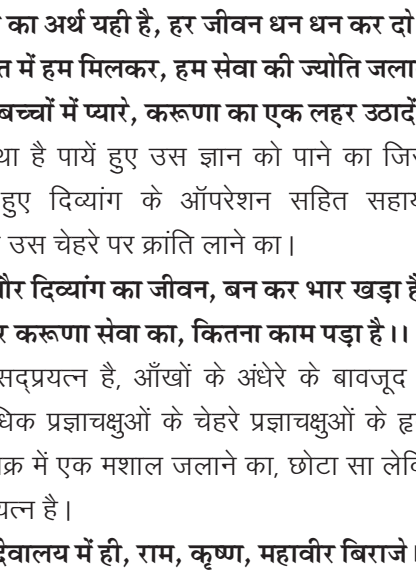

गतांक से आगे...

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई आकाश - पाताल,
आप कही भीतर गई, जूता खाय कपाल।(84)

ऐसा काम क्यों करें? क्यों किसी पर व्यंग्य करें? क्यों किसी का हँसी – मजाक उड़ावें? क्यों ताना देवें? ताना देने वाली बातें बहुत चलने लग गई।

बीति ताई बिसार दे

हाँ–हाँ जानते हैं साहब, आप तो बहुत बड़े वीर हो, लोग ताने देते हैं। हाँ–हाँ हमें मालूम है, ग्यारह साल पहले आपके साथ क्या हालत हुई थी, अब बड़े महान् बन रहे हो। सब जानते हैं सब जानते हैं। कितने महान् बन रहे हो?ताना दे दिया। उलाहना दे दिया। अरे साहब! आप निमंत्रण पत्र तो लेकर आये, लेकिन आप भी मेरी भतीजी के विवाह में कहाँ आये थे साहब 12 साल पहले, मुझे याद है साहब, आप हमारे विवाह में नहीं आये तो मैं आपके विवाह में क्यों आऊँगा?उलाहना दे दिया, उपहास कर लिया।ओह! ये तो बहुत बड़े आदमी हैं, जय रामजी की कर लिया, उपहास कर लिया। बात का बतंगड़, छोटी बात काभी। अरे! आप साईकिल लेकर गये तो किसको पूछकर गये?अरे साहब! मेरे को जल्दी जाना था और साईकिल जरूरी ले जानी थी, आपको तो मैंने कहला दिया था – मोहन लाल से। हाँ मोहनलाल ने तो कह दिया था, मुझे मालूम है कि आप साईकिल लेकर के गये, परन्तु मेरे से क्यों नहीं पूछा?लो साहब, गडबड़ा गया सब।अरे! दो सब्जी तो अच्छी थी लेकिन दही बहुत खट्टा था, ध्यान नहीं रखती हो। दही कब का जमाया हुआ है, आज सुबह जमाना चाहिये, आलसी हो क्या?

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

यह विचार खास तौर पर उन महानुभावों के सामने रखा जा रहा है जो सेवा के महत्त्व से तो भलीभाँति परिचित है ही, परन्तु वे उस शुभ मुहुर्त की प्रतिक्षा में हैं, जब वे सेवा का यज्ञ प्रारम्भ कर सकें या ऐसे व्यक्ति की तलाश में हैं, जो इनकी सेवा पाने का अधिकारी है।

आदरणीय! आपश्री जानते हैं कि दुनियाँ में बिरले ही लोग होंगे जो ये बता सकें कि उनको कौनसी व्याधि कब घेर लेगी? हमारी आँखों के सामने हर उम्र के हजारों–लाखों परिचित अपरिचित लोग अपनी इच्छाओं को मन में लिये हुए ही इस दुनिया से कूच कर जाते हैं और उनमें से कई ऐसे भी होते हैं जिनमें आप ही की तरह सेवा करने की तीव्र अभिलाषा थी और वे उपयुक्त समय और व्यक्ति का इन्तजार कर रहे थे। संकेत आपश्री समझे ही होंगे। मृत्यु जीवन का एकमात्र सत्य है, ध्रुव सत्य।

माननीय! हम जानते ही हैं लक्ष्मी चंचल होती है। आज वो आपके आँगन में हँसी खुशी से खेल रही है और भगवान न करे, कल रूठ जाये तो? आप तो सही आदमी और सही समय का इन्तजार ही करते रह गये न?

इसलिये जिस क्षण हमारे मन में सेवा करने का विचार उत्पन्न हुआ, वही क्षण सबसे उत्तम है। प्रतीक रूप से मान लीजिये आपके पास एक रोटी है और आप सोचते हैं जब मेरे पास दो रोटी हो जायेगी तब मैं एक रोटी उस भूखे बच्चे को दे दूँगा। संयोगवश आपकी वो रोटी भी कुत्ता छीन ले गया, तब?

आज आपके पास एक रोटी है तो आप उसमें से एक कौर दे दीजिये। कल जब आपके पास दो रोटी हो तो पूरी एक दे दें। सेवा में भावना का महत्त्व है– मात्रा का नहीं। जी हाँ, श्रद्धेय, इन दिनों आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो सेवा का कोई ऐसा कार्य चुन लीजिये जिसमें शारीरिक श्रम ज्यादा न करना पड़े पर अनिश्चित जीवन के बेशकीमती समय को व्यर्थ न गँवाइये।

अंधेपन का वरदान

अंधी भजन लेखिका फैनी की आँखें जन्म से तो बहुत सुन्दर थीं, पर आँखों की बीमारी के कारण रोशनी चली गई। माँ ने बहुत इलाज करवाये पर सफलता नहीं मिली। निराशा छोड़कर माँ ने उसे बाइबिल याद करवा दी। फैनी धीरे–धीरे कविता बनाने लगी। एकान्त में चुपचाप बैठती, हवा का संगीत, पानी का कल–कल, पक्षियों का कलरव सुनती थी। निराशा दूर हुई। अंध विद्यालय में पढ़ी, अध्यापिका बनी और हजारों गीत (भजन) लिखे। अंधेपन को वरदान समझा और साहित्य जगत में अमर हो गई। अंधेपन के कारण उसको चित्त की एकाग्रता, अवसर, संवेदनशीलता आदि गुण मिले। अभाव को वरदान समझकर जीवन पथ पर अग्रसर होना ही सफलता की कुंजी है।

सुविचार

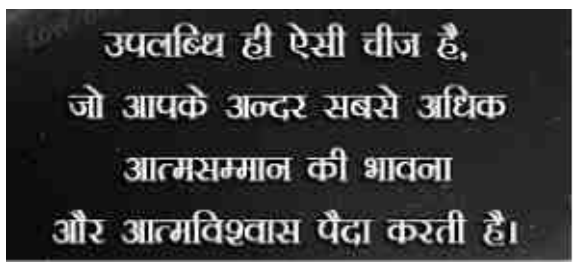

मानव धर्म का अनुसरण आवश्यक

&ukjk;.k lsok laLFkku esa lkekftd ifjorZu ds fy, Økafr dFkk vkjaHk

नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ बड़ी में सामाजिक बदलाव के लिए चार दिवसीय क्रांति कथा का शुभारंभ हुआ। व्यासपीठ से डॉ. कैलाश 'मानव' ने कहा कि यह जरूरी नहीं कि संसार से विरक्त होकर ही ईश्वर की साधना – आराधना हो सकती है, समाज की बेहतरी के लिए किए जाने वाले प्रयास भी ईश्वर साधना के समान ही हैं। उन्होंने कहा कि आज समाज में कुरीतियां और विसंगतियां यत्र–तत्र देखने में आती हैं। ऐसी स्थिति में परिवार, समाज और देश में परस्पर सहयोग, सद्भाव, संस्कार और प्रेम से मानव धर्म की स्थापना कर नव जागरण लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हम 'वसुवैध कोटम्बकम्' की बात तो करते हैं किन्तु घर–परिवार में ही शांति ओर सामंजस्य के प्रति उदासीन रहते हैं। उन्होंने कहा कि वेद से व्यवहार तक की कथा ही क्रांति कथा का आधार है।

कथा के मध्य में प्रसंगानुसार सामाजिक कुरीतियों के साथ ही ऋषि मार्कण्डेय – काल संवाद, हिरण्यकश्यप–प्रहलाद संवाद, भगवान नृसिंह अवतार आदि झांकियों का मंचन किया गया। आरंभ में नेपाल, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब से दिव्यांग बच्चों के निःशुल्क पोलियों करेक्शन के लिए अभिवावकों ने स्वतंत्रता सेनानियों एवं समाज सुधारकों के चित्रों के समक्ष पुष्पांजलि अर्पण कर दीप प्रज्वलन किया। कथा प्रभारी महिम जैन ने क्रांति कथा की भूमिका और उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

कहीं आप भी बंदर न बन जाए

एक बार कुछ वैज्ञानिकों (scientists) ने एक बड़ा ही रोचक प्रयोग (interesting - experiment) किया।

उन्होंने 5 बंदरों को एक बड़े से पिंजरे में बंद कर दिया और बीचों–बीच एक सीढ़ी लगा दी जिसके ऊपर केले लटक रहे थे। जैसी कि उम्मीद थी, जैसे ही एक बन्दर की नज़र केलों पर पड़ी वो उन्हें खाने के लिए दौड़ पड़ा। पर जैसे ही उसने कुछ सीढ़ियां चढ़ीं, उस पर ठण्डे पानी की तेज धार डाल दी गयी। इससे वह घबरा गया और उसे उतर कर भागना पड़ा।

पर प्रयोग (experiments) यहीं नहीं रूके। उन्होंने एक बन्दर के किये गए की सजा बाकी बंदरों को भी दे डाली और सभी को ठण्डे पानी से भिगो दिया। बेचारे बंदर हक्के–बक्के एक कोने में दुबक कर बैठ गए।

पर वे कब तक बैठे रहते ? कुछ समय बाद एक दूसरे बंदर को केले खाने का मन किया। वह भी उछलता –कूदता सीढ़ी की तरफ दौड़ा। अभी उसने चढ़ना शुरू ही किया था कि पानी की तेज धार से उसे नीचे गिरा दिया गया। और पहले की तरह इस बार भी इस बंदर के गुस्ताखी की सजा बाकी बंदरों को भी दी गयी। उन्हें एक बार फिर पानी की ठंडी धार का सामना करना पड़ा।

एक बार फिर बेचारे बन्दर सहमे हुए एक जगह बैठ गए। थोड़ी देर बाद जब तीसरा बंदर केलों के लिए लपका तो एक अजीब वाकया हुआ। बाकी क बंदर उस पर टूट पड़े और उसे केले खाने से रोक दिया, ताकि एक बार फिर उन्हें ठण्डे पानी की सजा ना भुगतनी पड़े।

अब वैज्ञानिकों ने एक और (interesting) चीज की। उन्होंने अंदर बंद बंदरों में से एक को बाहर निकाल दिया और एक नया बंदर अंदर डाल दिया। नया बंदर वहां के नियम क्या जाने, केले देखते ही उसके मुंह में पानी भर आया और वह तुरंत केलों की तरफ दौड़ पड़ा। पर यह देखकर बाकी बंदर अपने आप को रोक न सके। उन्होंने मिलकर उस नये बंदर की पिटाई कर दी। नये बंदर को यह समझ में नहीं आया कि आखिर क्यों ये बंदर खुद भी केले नहीं खा रहे और उसे भी नहीं खाने दे रहे। लेकिन एक बार पिटने के बाद उस को भी यह समझ में आ गया कि केले सिर्फ देखने के लिए हैं खाने के लिए नहीं।

इसके बाद वैज्ञानिकों ने एक और पुराने बंदर को निकाला और नया बंदर अंदर कर दिया। इस बार फिर वही हुआ। नया बंदर केलों की तरफ लपका पर बाकी के बंदरों ने उसकी धुनाई कर दी और मज़ेदार बात ये है कि पिछली बार आया नया बंदर भी धुनाई करने वालों में शामिल था, जबकि उसके ऊपर एक बार भी ठंडा पानी नहीं डाला गया था।

प्रयोग के अंत में सभी पुराने बंदर बाहर जा चुके थे और नए बंदर अंदर थे जिनके ऊपर एक बार भी ठंडा पानी नहीं डाला गया था। पर उनका व्यवहार भी पुराने बंदरों की तरह ही था। वे भी किसी नए बंदर को केलों को नहीं छूने देते थे।

दोस्तो, आप सोच कर देखिए, क्या हमारे समाज में भी यही बंदरों वाला व्यवहार देखने को नहीं मिलता है ? जब भी कोई नया काम शुरू करने की कोशिश करता है, चाहे वो पढ़ाई, खेल, एंटरटेनमेंट, राजनीति, समाज सेवा या किसी और फिल्ड से संबंध हो, उसके आसपास के लोग उसे ऐसा करने से रोकते हैं, उसे असफलता का डर दिखाया जाता है। और मजेदार बात ये है कि उसे रोकने वाले ज्यादातर लोग वो होते हैं जिन्होंने खुद उस क्षेत्र में कभी हाथ भी नहीं आजमाया होता .....

इसलिए यदि आप भी कुछ नया करने की सोच रहे हैं और आपको भी समाज या आसपास के लोगों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है तो थोड़ा संभल कर रहिये। अपने तर्को और क्षमताओं की ओर देखिए, खुद पर और अपने लक्ष्य पर विश्वास कायम रखिये, और बढ़ते रहिये। कुछ बंदरों की जिद के आगे आप भी बंदर मत बन जाइए।

जेबा को मिली नई जिंदगी

बिहार के गया जिले के गाँव घोरा घाट में रहने वाले मशूक अली की पुत्री जेबा अन्जुम (11) दिल में छेद होने से काफी परेशान थी। खेलना–कुदना भूल वह पलंग पर लेटी सारा दिन छत को निहारती रहती थी। मशूक अली घर घर ही प्रावेट ट्यूशन पढ़ाकर सात सदस्यीय परिवार का पोषण करते है। जन्म से ही बीमार बेटी के दुःख से सारा पुरा परिवार ही बीमार था। बच्ची को कई अस्पतालों में दिखाया गया, लेकिन दवा से कोई लाभ नहीं हुआ। समय बीतता गया, और धीरे–धीरे जेबा ने खाना–पीना भी कम कर दिया और कुछ फिर कुछ अरसे बाद उसे सांस लेने में भी तकलीफ होने लगी। इस पर उसे जयपुर के नारायण हृदयालय में दिखाया गया वहां डॉक्टरों ने जांच कर बताया कि दिल में छेद के कारण तुरन्त ऑपरेशन की जरूरत है। यदि दीक्षता नहीं की गई तो सांसों की डोर कभी भी टूट सकती है। उन्होंने ऑपरेशन का खर्च करीब डेढ़ लाख रुपये बताया लेकिन इतना बड़ा खर्च इस गरीब परिवार के लिए संभव नहीं था। तभी टी. वी. द्वारा नारायण सेवा संस्थान–सेवा परमो धर्म ट्रस्ट द्वारा जटिल रोगों के निःशुल्क ऑपरेशन करवाने की जानकारी मिली।

पिता मशूक अली ने संस्थान से सम्पर्क कर उन्हें स्थिति से अवगत कराया। इस पर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री अग्रवाल ने बच्ची की हालत को देखते हुए तुरन्त उपचार के लिए नारायण हृदयालय जयपुर भिजवाने और ऑपरेशन व दवा की सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क करवाई। बच्ची को ऑपरेशन के बाद नई जिंदगी मिल गई। अब वह खेलती–कूदती है और स्कूल भी जाती है।

चिंता मुक्त हुआ विक्रम का परिवार

इनके पिता चित्तौड़गढ़ के एक पेट्रोल पंप पर कार्य कर मंडल 3000/– हजार रुपये मासिक कमा पाते है। इतनी कम आय में परिवार का भरण–पोषण ही बहुत मुश्किल हो रहा था। पैतृक गाँव में जमीन–जायदाद न होने से विक्रम सिंह के पिता शम्भुसिंह ससुराल में रहकर परिवार सहित जीवन यापन करते है। विक्रम का बचपन से लेकर अबतक कई जगह इलाज चला और दवाई ली लेकिन फर्क नहीं पड़ा। वह दिनोदिन कमजोर हो रहा था। एक बड़े अस्पताल में दिखाने पर डॉक्टरों ने जांच कर बताया कि दिल

गाँव–पीपारोली, तहसील–मावली, उदयपुर

विक्रम सिंह (17) जन्म से ही हृदय के वाल्व की खराबी

का वॉल्व खराब है और तत्काल ऑपरेशन की जरूरत है। ऑपरेशन खर्च पूछने पर उन्होंने बताया कि कम से कम डेढ़ लाख रुपये होगा। इस गरीब परिवार ने इतनी बड़ी रकम जुटाने की हरसम्भव कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली। समय गुजरता गया इसी दौरान सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के बारे में जानकारी मिली। श्री शम्भुसिंह ने अपने पुत्र की पीड़ा और अबतक के इलाज के बारे में जानकारी देते हुए ऑपरेशन में मदद चाही। ट्रस्ट अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने जयपुर के नारायण हृदयालय में इलाज की तुरन्त व्यवस्था करवाई जहा उसका ऑपरेशन सफलतापूर्वक हो चुका है। विक्रम का स्वास्थ निरंतर प्रगति पर है। परिवार भी चिन्ता मुक्त है।

■ दूसरों को सहयोग देना ही उन्हें अपना सहयोगी बनाना है।

खाँसी हो तो ये करें उपाय

खाँसी बड़ा ही विकट रोग है जो न हँसने देती है, न खाने देती है और न सोने देती है। वृद्धावस्था में ज्यादा परेशान करती है। सांस को अटका सा देती है, पूरे पेट की आँतों को खींच लेती है। कभी–कभी तो उल्टी भी आ जाती है।

कारण :– 1. ज्यादातर रूखा एवं सूखा भोजन करना। 2. अपनी क्षमता से अधिक कार्य करना। 3. पोषक भोजन का अभाव। 4. कब्ज का बने रहना। 5. पाचक रसों की कमी। 6. ज्यादा पेस्ट व मंजन करना। 7. ज्यादा चाय, कॉफी, नशीले व मादक पदार्थो का सेवन करना। 8. धूम्रपान व मद्यपान करना। 9. जुकाम को दबाने वाली दवाओं का प्रयोग करना। 10. मोटापा या मधुमेह होना।

उपचार :–1. सबसे अच्छा उपचार कारणों का निवारण करें। 2. एक नींबू दो चम्मच शहद एक गिलास गुनगुना पानी में मिलाकर पीएँ। 3. मौसम्मी का रस या वैसे ही खाना बहुत ही लाभकारी व कारगर है। 4. शहद में अदरक का रस मिलाकर चाटें। 5. रतालू, अरवी, कटहल की सब्जी इसमें बड़ी लाभकारी है। 6. दालचीनी शहद या पानी के साथ लें। 7. इलायची मुँह में रखें या 2 लौंग एक कच्चा व दूसरा सिका हुआ मुँह में रखें। 8. मुनक्का दाख, कालीमिर्च व नमक स्वाद के अनुसार मिलाकर लें। 9. मुलैठी मुँह में रखकर चूसें। 10. प्याज की सब्जी देशी घी में बनाकर खाएँ। 11. सलाद, अंकुरित मूंग, मोठ, मैथी, रिजका, मूंगफली का प्रयोग करें। 12. तीन टमाटर उबालकर उसमें 3 छोटी पीपल मिलाकर खाएँ। 13. दो लौंग, पान के डाड 2, तुलसी पत्ते 10, गुड़ में मिलाकर खाएँ।

मुस्कान मानवता की

(मानव धर्म शृंखला का षष्टम् (6) पुष्प)

नारायण सेवा का अर्थ है –

भूखे को भोजन, गरीब को वस्त्र।
बीमार को दवा , प्यासे को पानी।।(17)
यही है मानव सेवा।
..... याद दिलाया पुज्य मानवजी
मानव धर्म महान्, मानव धर्म महान
महामन्त्र गायत्री का ..... (18)

बोलिये महापुरूषों की जय। कौन है महापुरूष ? जो अधर्म और धर्म का ज्ञान करादे। शांतिकुंज हरिद्वार में, जब ये सेवक एक महीने रहा हमें लगा धर्म का अर्थ है इन्सानियत, धर्म का अर्थ है बराबरी, धर्म का अर्थ है भूखे को भोजन कराना, धर्म का अर्थ है प्यासे को पानी पिलाना, धर्म का अर्थ है किसी बीमार को दवा दिला देना। एक महीने में काया कल्प हो गया। प्रातः काल तीन–साढ़े तीन बजे उठते थे, स्नान के पूर्व बाथरूम को साफ करते थे, हमारे में बार–बार रहता था कि हम अधिक से अधिक शौचालयों की सफाई करें। चार–चार शौचालय हमने माँगकर लिये थे, इनकी सफाई हम करेंगे, इन बाथरूम को हम धोयेंगे, इनमें पोंछा हम लगायेंगे। काम को छोटा मत समझना, काम को ये नहीं समझना कि ये काम छोटा है, मैं बड़ा आदमी हूँ।

तर्ज :– दोहा कबीर वाणी
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।(19)

आपके अरबों रुपये हैं, यदि गरीब के काम नहीं आये तो रुपया क्या काम का महाराज। उस रुपये के तो आप केवल चौकीदार बन गये, जब शान्तिकुंज हरिद्वार में सवा चार बजे स्नान करके यज्ञ में बैठते थे, हमारा मन पवित्र हो जाता था। जल स्पर्श करके बाँए हाथ में जल लेकर दाँये हाथ से शरीर पर छिड़कते थे – ''ऊँ अपवित्र पवित्रम्'' अपवित्रता से पवित्र की ओर बढ़ें, अन्याय से न्याय की ओर बढ़ें, हम गुस्से से प्यार की ओर बढ़ें, हम खिजलाहट से मुस्कुराहट की ओर बढ़ें। ये खिजलाहट, ये चिड़चिड़ाहट, ये ईर्ष्या, ये अधर्म वाले हैं। ये कुलदागी जेल में रहा फिर भी मोबाइल से षड्यन्त्र करता रहता था। जहाँ पर भी धर्म का काम होता था, कभी पूतना के रूप में, कभी लंकिनी के रूप में, कभी शूर्पणखा के रूप में, कभी दुष्ट दुशासन के रूप में, कहीं अधर्म मेघनाद के रूप में, कहीं घमण्डी कुम्भकरण के रूप में, और कोई अभिमान के पुतले रावण के रूप में आ करके धर्म को कष्ट दिया करता था। अपने को क्या करना है? अपने को धर्म को जल देना है, अपने धर्म को खाद्य देना है। ये धर्म रूपी पौधा, ये छोटी–सी बिटिया आपके घर में पुत्री होकर पधार गई। ये हर बाला देवी की मूरत, बच्चा–बच्चा राम है। इस बेटी को बहुत आदर दीजिए, इस बेटी को बहुत प्यार दीजिए, ये बेटी मदालसा है, ये बेटी अनुसूया है, ये बेटी सीता मैया है, ये उर्मिला है, ये बेटी दुर्गा माता का स्वरूप है, ये वैष्णदेवी माता है, ये विन्ध्याचली माता है। कभी बेटे – बेटी में भेद मत करना। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

धर्म का कार्य करे महाराज, किशना जी भील की कृपा हुई। हमें लगा, ये धर्म का काम है, एक–एक मुट्ठी आटा एकत्रित करेंगे, हम उसके फुलके बनायेंगे, हम सब्जी के साथ भूखे को भोजन करायेंगे, यही धर्म है। बाबु, दया। दया धर्मस्य मूलम्। दया से करूणा का जन्म होता है। करूणा से प्यार बढ़ता है, प्यार से मोहब्बत उत्पन्न होती है।

पैर पिछाणे मोजड़ी, नैण पिछाणे नेह।(20)

आपके नेह को याद रखना। बाबू शुरूआत कीजिए शरीर को स्वस्थ रखने से। किशना जी भी की कृपा से, नारायण सेवा ने जन्म लिया। हाँ महाराज! हमें लगा ऐसे कितने ही किशना जी हैं जिनका बेटा और भाई बैठे हैं। जिनका स्वर्गवास हो गया। किशन जी जोशी साहब को हम प्रणाम करते हैं, कमललाल जी पानेरी साहब को, तेज सिंह जी साहब को और जो आज भी हमें आशीर्वाद दे रहे हैं, ऐसे सोहन लाल जी पूर्बिया साहब को, कमला देवी जी को, हम नमन करते हैं, रामचन्द्र जी भट्टर साहब का हम अभिनन्दन करते हैं, बाबू इस इस दुनिया में अमर होकर कोई आया नहीं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सलयक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, लिण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, लिण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com